RNI NO. DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER | ESTABLISHED 2004 | NEW DELHI | DEC 2015 | PAGES - 8 | PRICE - 1/- | MONTHLY BILINGUAL (HINDI/ENGLISH)

विश्व एड्स दिवस

विश्व एड्स दिवस पूरी दुनिया में हर साल 1 दिसम्बर को लोगों को एड्स (एक्वायर्ड इम्युनो डेफिशियेंसी सिंड्रोम) के बारे में जागरुक करने के लिये मनाया जाता है। एड्स ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेंसी (एचआईवी) वायरस के संक्रमण के कारण होने वाला महामारी का रोग है। यह दिन सरकारी संगठनों, गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाज और अन्य स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा एड्स से संबंधित भाषण या सार्वजनिक बैठकों में चर्चा का आयोजन करके मनाया जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने साल 1995 में विश्व एड्स दिवस के लिए एक आधिकारिक घोषणा की जिसका अनुकरण दुनिया भर में अन्य देशों द्वारा किया गया। एक मोटे अनुमान के मुताबिक, 1981–2007 में करीब 25 लाख लोगों की मृत्यु एचआईवी संक्रमण की वजह से हुई। यहां तक कि कई स्थानों पर एंटीरेट्रोवायरल उपचार का उपयोग करने के बाद भी, 2007 में लगभग 2 लाख लोग (कुल का कम से कम 270,000 बच्चे) इस महामारी रोग से संक्रमित थे।

विश्व एड्स दिवस समारोह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य दिन समारोह बन गया है। विश्व एड्स दिवस स्वास्थ्य संगठनों के लिए लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाने, इलाज के लिये संभव पहुँच के साथ–साथ रोकथाम के उपायों पर चर्चा करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।विश्व एड्स दिवस की पहली बार कल्पना 1987 में अगस्त के महीने में थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न द्वारा की गई थी। थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न दोनों डब्ल्यू.एच.ओ.(विश्व स्वास्थ्य संगठन) जिनेवा, स्विट्जरलैंड के एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के लिए सार्वजनिक सूचना अधिकारी थे। उन्होंने एड्स दिवस का अपना विचार डॉ. जॉननाथन मन्न (एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के निदेशक) के साथ साझा किया, जिन्होंने इस विचार को स्वीकृति दे दी और वर्ष 1988 में 1 दिसंबर को विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाना शुरु कर दिया। उनके द्वारा हर साल 1 दिसम्बर को सही रुप में विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने इसे चुनाव के समय, क्रिसमस की छुट्टियों या अन्य अवकाश से दूर मनाने का निर्णय लिया। ये उस समय के दौरान मनाया जाना चाहिए जब लोग, समाचार और मीडिया प्रसारण में अधिक रुचि और ध्यान दें सकें।

एचआईवीध्एड्स पर संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम, जो यूएन एड्स के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष 1996 में प्रभाव में आया और दुनिया भर में इसे बढ़ावा देना शुरू कर दिया गया। एक दिन मनाये जाने के बजाय, पूरे वर्ष बेहतर संचार, बीमारी की रोकथाम और रोग के प्रति जागरूकता के लिये विश्व एड्स अभियान ने एड्स कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए वर्ष 1997 में यूएन एड्स शुरु किया।शुरु के सालों में, विश्व एड्स दिवस के विषयों का ध्यान बच्चों के साथ साथ युवाओं पर केन्द्रित था, जो बाद में एक परिवार के रोग के रूप में पहचाना गया, जिसमें किसी भी आयु वर्ग का कोई भी व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो सकता है। 2007 के बाद से विश्व एड्स दिवस को व्हाइट हाउस द्वारा एड्स रिबन का एक प्रतिष्ठित प्रतीक देकर शुरू किया गया था।

प्रस्तुति- प्रियंका सिंह, बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

गोवा में लें समुद्र तटों के साथ जल परिवहन का आनंद

कर्नाटक और महाराष्ट्र से घिरे गोवा की झीलें, झरने एवं नदियां और बाग–बगीचों के अलावा सागर तट देशी–विदेशी पर्यटकों को वर्ष भर आकर्षित किए रहते हैं। यहां के अनेक बीच मसलन–कलंगूट, कोलवा, डोना पाउला, मीरामार, अंजुना, बागाटोर, अगोंडा, आरामबोल व पोलोलेम आदि पर्यटकों से भरे रहते हैं। सागर तट के साथ ही यहां नारियल, ताड़, काजू, कटहल व आम के वृक्षों की भी भरमार है।

गोवा की खास विशेषता यहां का जल परिवहन है। मोटरबोट व अन्य नौकाएं डोना पाउला से मारगाओ हार्बर के बीच तथा मांडवी व जुआरी नदियों के तट पर पर्यटकों को सैर कराने के लिए सदैव उपलब्ध रहती हैं। गोवा पर लगभग 450 वर्षों तक पुर्तगालियों का शासन रहा। भारत के स्वाधीन होने के 16 वर्ष बाद 1961 में यह पुर्तगाली शासन से मुक्त हुआ और भारत का अंग बन कर एक स्वतंत्र राज्य बन गया।

अरब सागर को छूने वाले गोवा का पश्चिमी छोर इतना विशाल है कि उत्तर से दक्षिण तक सागर तट की लंबाई लगभग 150 किलोमीटर है। सागर किनारे मीलों तक फैले रेतीले तट पर लोग धूप का आनंद लेते हैं। अंजुना बीच पर हिप्पी लड़के–लड़कियों का क्रीड़ा स्थल भी है। हजारों की संख्या में हिप्पी नंगे बदन दिन पर रेत पर लेट कर धूम्रपान का आनंद लेते हैं। अरब सागर से पेड़–पौधों और हरियाली के बीच से आने वाली पछुआ बयार का स्पर्श भी सबको रोमांचित कर देता है। पर्यटक गुब्बारे के सहारे सागर की लहरों पर उड़ते हुए पैरासेलिंग के रोमांचकारी आनंद का अनुभव भी कर सकते हैं।

गोवा की राजधानी पणजी से छह किलोमीटर दूर सात किलोमीटर तक धनुषाकार कलंगूट बीच को तो सागरतट की रानी कहा जाता है। मार्च से मई के बीच यहां सैलानियों की भीड़ उमड़ पड़ती है। पणजी के दक्षिण महागांव से मात्र छह किलोमीटर दूर ताड़ व नारियल के वृक्षों से आच्छादित कोलवा बीच एक खूबसूरत समुद्र तट है। यहां से सूर्योदय व सूर्यास्त के मनोरम दृश्य बड़े ही विहंगम लगते हैं। मीरामार बीच पणजी से तीन किलोमीटर दूर है। पणजी का निकटतम बीच होने के कारण यहां सैलानियों का तांता लगा रहता है। गोवा का सबसे प्रसिद्ध डोना पाउला बीच पणजी से सात किलोमीटर दूर है। इस सागर तट पर सैलानियों की अत्यधिक भीड़ होने से यहां काफी रौनक रहती है। यहां अरब सागर की लहरें किनारे को छूकर लहलहाती वापस सागर में मिल जाती हैं।

उत्तर गोवा में मांडवी नदी के तट पर गोवा की राजधानी पणजी में पुर्तगाली सभ्यता तथा ईसाई धर्म का काफी प्रभाव है, इसलिए यहां के अधिकतर निवासी पश्चिमी वेशभूषा में ही दिखाई पड़ते हैं। यहां प्रत्येक मकान में लाल रंग की ढलवां छत है। यह एक रूमानी शहर है। पणजी के बीचोंबीच बीजापुर नवाब का पुराना महल है।

विश्व प्रसिद्ध चर्च वसिलिका आफ बाम जीसस चर्च भी यहीं है। चर्च के परिसर में संत फ्रांसिस जेवियर के पार्थिव शरीर की 400 वर्षों से ममी रखी हुई है। यह ममी जीवंत प्रतीत होती है। संत जेवियर का पार्थिव शरीर चांदी की मंजूषा में रखा हुआ है। इसके ऊपर शीशे का आवरण है। बिना किसी मसाले के लंबे समय तक रखे रहने पर भी शव में कोई विकृति नहीं आई है। हर दस वर्ष पर शव को मंजूषा से निकाल कर एक माह तक खुले मंच पर लोगों के दर्शनार्थ रख दिया जाता है।

गोवा का मंगेश मंदिर भी दर्शनीय है। यह मंदिर पणजी से 23 किलोमटर की दूरी पर स्थित है। पोंडा स्थित मंगेश का मंदिर 400 वर्ष पुराना है। भगवान शिव का यह मंदिर गोवा का सबसे खूबसूरत मंदिर है। गोवा के अन्य दर्शनीय स्थलों में अगोडा का किला, मेथम झील, दूध सागर, महावीर वन्य जीवन अभ्यारण्य तथा गोवा संग्रहालय व गोवा के ऐतिहासिक किलों का नाम लिया जा सकता है। गोवा में 17वीं शताब्दी में निर्मित पणजी से 20 किलोमीटर दूर अडवंदा फोर्ट में प्राचीर से लगी 79 बड़ी तोपें आज भी देखी जा सकती हैं। इसी किले की बदौलत पुर्तगाली सेना ने डच और फ्रांसीसी सेना को परास्त किया था।

गोवा आने के लिए सबसे बढि□या समय अक्टूबर से मई तक है। जून से सितंबर तक यहां बारिश होती है। इसलिए उस समय कम पर्यटक आते हैं। गोवा शेष भारत से जल, वायु, रेल और सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है।

प्रस्तुति- शिवांगनी पांडेय, बीजेएमसी प्रथम वर्ष

इस बार सर्दियों में बहुत कुछ है पहनने के लिए

सर्दियों में अक्सर कपड़ों के चयन को लेकर असमंजस होता है। सर्दी शुरू होते ही गर्म कपड़ों की खरीददारी शुरू हो जाती है। मगर खरीदारी करते वक्त प्रायः लोग लेटेस्ट ट्रेंड पर ध्यान नहीं दे पाते। नतीजा गलत कपड़े खरीद लिए जाते हैं। युवाओं के लिए इस सर्दी में पहनने के लिए बहुत कुछ है। इस बार चेक और लाइनिंग वाले कपड़े आउट ऑफ फैशन हैं। खासकर स्वेट कपड़ों में। अगर आप स्वेट पहनने के शौकीन हैं तो प्लेन स्वेट का फैशन है। चेक और स्ट्राइप्स वाले स्वेट अब फैशन का हिस्सा नहीं हैं। जैकेट खरीदने की सोच रहे हैं, तो मार्केट में काफी वैरायटी है। आप उनमें से खरीद सकते हैं। मगर इस बात का जरूर ध्यान रखें कि यह आपके लुक को बेहतर करता हो। कई लोग महंगे लेदर जैकेट पहनना पसंद करते हैं पर इसके रखरखाव पर काफी ध्यान रखना पड़ता है। वैसे भी इसकी शुरुआत ही पांच हजार रूपए से शुरू होती है। अगर नार्मल जैकेट लेना चाहते हैं, तो इसकी शुरुआत छह सौ रुपए से होती है। यह गर्माहट के साथ बजट का भी ख्याल रखता है। कुछ नया डिजाइन ट्राई करना चाहते हैं, तो रेमंड ने अपने दूसरे नाम मेकर्स से इस बार कपड़ों की अच्छी वैरायटी बाजार में उतारी है।

कई युवा स्कार्फ लेना भी पसंद करते हैं। पर स्कार्फ लेने से पहले अपने लुक पर जरूर ध्यान दें क्योंकि हर किसी पर स्कार्फ अच्छा नहीं लगता। फिल्म एक था टाइगर में श्सलमान खानश को स्कार्फ बांधे देख युवाओं में एक बार फिर से स्कार्फ का क्रेज बढ़ा है। कई युवा फैंसी लुक के लिए स्कार्फ का इस्तेमाल करते हैं। अगर इस ठंड में आप स्कार्फ कैरी कर रहे हैं, तो इस बात का ध्यान रखें कि यह आपकी पर्सनैलिटी को बढिया दिखाने में मदद करे।

युवतियों की बात करें तो कुर्तियां हमेशा से हॉट फेवरेट रही हैं। पर सर्दियों में बाजार में आपके लिए बहुत कुछ है। गर्म कुर्तियां आपके लुक को बेहतरीन बनाने के साथ साथ सर्दी से भी बचाती हैं। कई युवतियां सलवार–कमीज नहीं पहनना चाहतीं, जींस पहनती हैं। अगर आप जींस भी पहनती हैं, तो उसके साथ गर्म कुर्ती आसानी से पहन सकती हैं। प्रिंटेंड, प्लेन या मल्टीकलर में ये कुर्तियां बाजार में मौजूद हैं। कुछ अलग पहनना चाहती हैं, तो कश्मीरी कुर्ती, कुल्लु कुर्ती या अनारकली कुर्ती ट्राई कर सकती हैं। मगर ध्यान रखें कि आप अपने लुक को ध्यान में रखकर ही इन्हें मैचिंग लेग्गिंस के साथ कैरी करें।

युवतियों में स्कार्फ का फैशन आउट हो गया है– स्कार्फ की जगह अब प्रिंटेंड स्टोल ने ले ली है। यह स्टोल काफी हल्के पर बेहद गर्म होते हैं साथ में आपको स्टाइलिश लुक भी देते हैं। अगर स्कार्फ पहनने की शौकीन हैं, तो हल्के प्रिंटेंड स्टोल इस्तेमाल कर सकती हैं। यह स्कार्फ के साथ–साथ दुप्पट्टा जैसा भी काम करता है। युवतियों के लिए सर्दियों में दुपट्टे की जगह अब खूबसूरत और गर्म स्टोल ने ली है। महिलाओं के लिए जहां बाजार में तरह–तरह की खूबसूरत शाल मौजूद हैं, वहीं युवतियों की पसंद की स्टोल भी खूब बिक रही हैं। फैंसी स्टोल के शौकीन हैं तो ट्राई कर सकती हैं पर यह ज्यादा गर्म नहीं होते।

युवतियां स्वेटर से ज्यादा जैकेट और कोट की शौकीन होती हैं। अब जैकेट से ज्यादा लम्बे कोट का फैशन है। ब्लैक, ब्राउन और कॉफी कलर सर्दियों में लोगों की पहली पसंद होती है। आप इसे जींस के साथ कैरी कर सकती हैं या कुर्ती के साथ। स्वेटर में भी अच्छी वैरायटी बाजार में मौजूद है। ब्लैक तो हमेशा से युवतियों की पहली पसंद रही है पर इस सर्दी में व्हाइट का फैशन जोरों पर है। तो इस सीजन में फैशनेबल गर्म कपड़ों से अपने वार्डरोब को क्यों न ट्रेंडी बनाएं।

प्रस्तुति- करुणा ढोंढियाल, बीजेएम, प्रथम वर्ष

फार्मेसी में पाठ्यक्रम कर सुरक्षित बनाएँ अपना भविष्य

विज्ञान विषय से बारहवीं करने के बाद कॅरियर की तलाश करने वाले अभ्यर्थियों की नजर आम तौर पर मेडिकल, इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों पर ही जाती है। गिने–चुने छात्र ही संभावनाओं से भरे फार्मेसी जैसे कॅरियर को अपनाते हैं। जबकि मेडिकल विज्ञान का उद्देश्य फार्मेसी विज्ञान के बिना पूरा नहीं होता। इस विज्ञान के तहत नई–नई दवाइयों की खोज से लेकर उनकी गुणवत्ता, रखरखाव और दूसरे कई जरूरी पहलुओं का अध्ययन कराया जाता है।

देश भर में फार्मेसी पाठ्यक्रम का अध्ययन कई सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं में कराया जाता है। इन कॉलेजों और संस्थाओं में इसके अलग–अलग पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। हर पाठ्यक्रम की समय सीमा भी अलग–अलग है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने के लिए अभ्यर्थी को भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीवविज्ञान विषयों समेत 12वीं कक्षा पास होना आवश्यक है और इसमें नामांकन के लिए कॉलेजों के हिसाब से अलग–अलग मापदण्ड निर्धारित हैं।

बैचलर इन फार्मेसी– इस पाठ्यक्रम के तहत अभ्यर्थी को दवाइयों में इस्तेमाल तत्वों की मात्रा, गुणवत्ता से संबंधित जानकारी दी जाती है। इस चार वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश

के लिए अभ्यर्थी को विज्ञान विषयों में 102 परीक्षा 60 प्रतिशत अंकों के साथ उतीर्ण होना अनिवार्य है।

मास्टर इन फार्मेसी– इस पाठ्यक्रम के तहत दवाइयों के उत्पादन, निर्माण, विकास और प्रयोगशालाओं में शोध विशेषता प्रदान की जाती है। इस दो वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी को बैचलर आफ फार्मेसी या उसके समकक्ष पाठ्यक्रम में 50 प्रतिशत अंकों से स्नातक होना आवश्यक है।

डिप्लोमा इन फार्मेसी– इन पाठ्यक्रम के तहत दवाइयों की बिक्री, रखरखाव और पैकेजिंग की जानकारियां दी जाती हैं। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी को 60 फीसदी अंकों के साथ विज्ञान विषयों में 12वीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

रोजगार के अवसर– बी फार्मा उत्तीर्ण छात्रों को मैन्युफैक्चरिंग केमिस्ट, ड्रग विश्लेषक, चिकित्सा प्रतिनिधि के तौर पर काम मिल जाता है। जबकि एम फर्मा उत्तीर्ण छात्र संबंधित पदों के अलावा मैन्युफैक्चरिंग अधिकारी, उत्पादन विकास अधिकारी, विशलेषणात्मक अधिकारी और जूनियर वैज्ञानिक के पद पर सरकारी और गैर सरकारी दवा स्थानों में काम करते है जबकि पीएचडी अभ्यर्थी दवा कंपनियों में प्रयोगशाला अधिकारी और वैज्ञानिक के तौर पर काम करते हैं।

फार्मेसी विज्ञान के विभिन्न पाठ्यक्रमों में इन संस्थानों में प्रवेश ले सकते हैं–

– बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, पिलानी, राजस्थान।
– डिपार्टमेंट ऑफ फार्मेसी एंड सांइसेज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।
– इस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
– कॉलेज ऑफ फार्मेसी, पुष्प विहार, सेक्टर 3, नई दिल्ली।
– डिपार्टमेंट ऑफ फार्मास्यिूटिकल जादवपुर यूनिवर्सिटी, कोलकाता।
– बिहार कॉलेज ऑफ फार्मेसी, बेली रोड़, पटना।

बालकृष्ण मिश्र

कब छुआछूत से ऊपर उठेगा भारत?

जिस वक्त भारत में आजादी के आंदोलन चल रहे थे, उस वक्त समान सामाजिक हकों के लिए भी आवाजें उठ रहीं थीं. कानूनी रूप से हक मिले भी, लेकिन देश आज भी छुआछूत के खेल में फंसा हुआ हैं।

विश्व के महान धर्मों के मानने वालों में यहूदी, पारसी और हिन्दू अन्य धर्मावलंबियों को अपनी ओर आकृष्ट करके उनका धर्म बदलने में कोई रुचि नहीं रखते. लेकिन दुनिया में संभवतः हिन्दू धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है जो अपने मानने वालों के एक बहुत बड़े समुदाय को अपने से दूर ठेलने की हरचंद कोशिश करता है और उन्हें अपने मंदिरों में न प्रवेश करने की इजाजत देता है, न देवताओं की पूजा करने की. उल्टे वह इन्हें अछूत बताकर इनकी छाया से भी दूर रहने की कोशिश करता है और इस क्रम में उन्हें बुनियादी मानवीय अधिकारों से पूर्णतः वंचित करके लगभग जानवरों जैसी स्थिति में रहने के लिए मजबूर करता है।

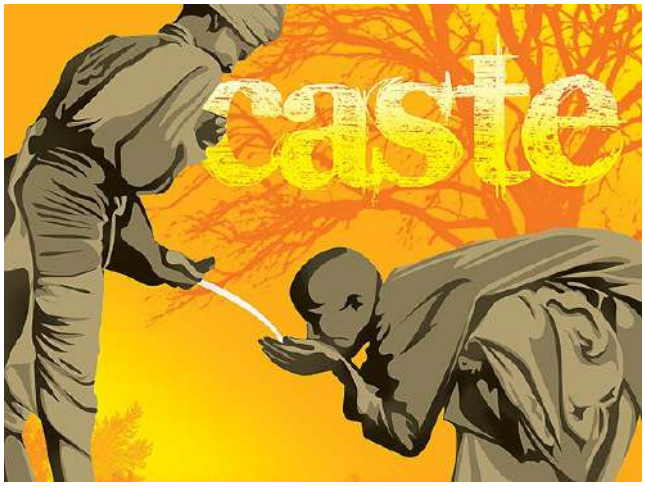

आज भी छुआछूत और यह सब जाति के नाम पर किया जाता है. मंदिर में प्रवेश करने और पूजा–अर्चना करने का अधिकार केवल सवर्ण हिंदुओं यानि ऊंची जाति के हिंदुओं को ही है. अछूत समझी जाने वाली जातियों (जिन्हें अब दलित कहा जाने लगा है) को यह अधिकार नहीं है. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत के विभिन्न हिस्सों में उठ खड़े समाज सुधार आंदोलनों का एक लक्ष्य इन स्थिति को बदलना भी था।

प्रस्तुति- अनुप्रिया डोभाल, बीजेएमसी तृतीय वर्ष

कन्याकुमारी

जहाँ मिलते हैं अरब सागर और बंगाल की खाड़ी

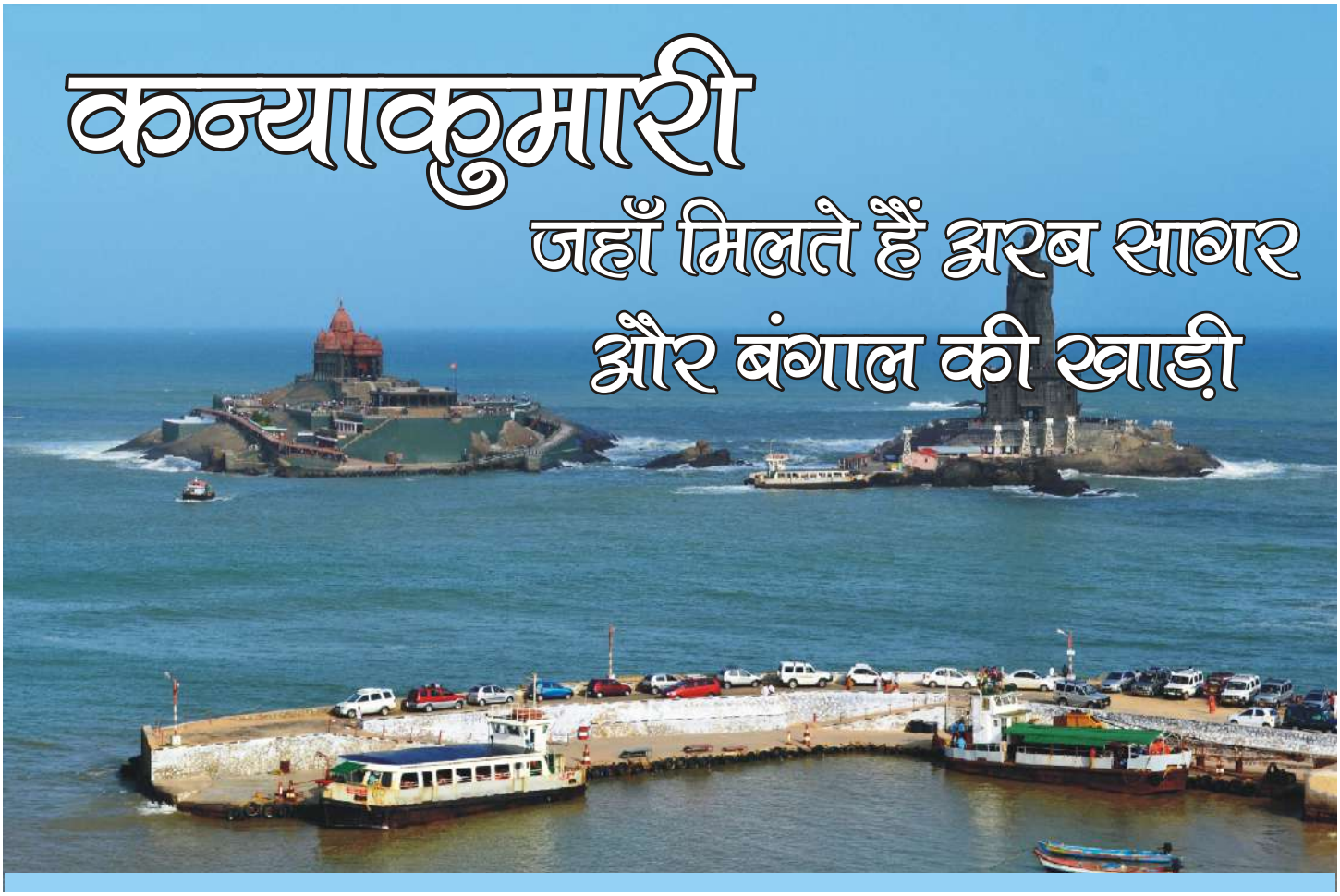

भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित पवित्र स्थान कन्याकुमारी के बारे में कहा जाता है कि स्वामी विवेकानंद जब ज्ञान की खोज में निकले थे तो यहीं पहुंच कर उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहां अरब सागर और बंगाल की खाड़ी हिंद महासागर में आकर मिलते हैं। इसलिए यहां तीन अलग–अलग रंगों की रेत देखने को मिलती है।

शहर की भीड़ से दूर तथा तनाव व शोरगुल से भी दूर यह स्थान बड़ा शांतिमय है। यहां यदि शोर है तो वह है सिर्फ समुद्री लहरों का, जोकि कानों में संगीत की तरह गूंजता है। कन्याकुमारी के सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य तो देखते ही बनते हैं।

कन्याकुमारी का मंदिर कन्याकुमारी को ही अर्पित है। इस मंदिर को भारत के छोरों का रखवाला भी माना जाता है। इस मंदिर को मदुरै, रामेश्वरम और तिरूपति आदि मंदिरों की तरह ही पवित्र माना जाता है। इस मंदिर की खास बात यह है कि यहां केवल हिन्दू ही जा सकते हैं। यह मंदिर प्रातः चार बजे से लेकर ग्यारह बजे तक तथा उसके बाद सायं 5.30 से लेकर 8.30 तक खुला रहता है।

यहां विवेकानन्द जी का स्मारक भी है। यह समुद्र के बीच एक विशाल शिला पर स्थित है। इस शिला पर बैठ कर ही स्वामी विवेकानंद जी ने साधना की थी। स्मारक के कक्ष में विवेकानन्द जी की विशाल मूर्ति भी है। स्मारक स्थल से चारों और फैले विशाल समुद्र का दृश्य आपको मंत्रमुग्ध कर देगा।

कन्याकुमारी में महात्मा गांधी का स्मारक भी है। यहीं पर महात्मा गांधी का अस्थि कलश रखा गया था। यह स्मारक कन्याकुमारी मंदिर के ठीक पास ही बना हुआ है। पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र यह स्मारक अपनी अद्भुत कलाकृति के लिए भी जाना जाता है।

कन्याकुमारी से लगभग 34 किलोमीटर दूर स्थित उदयगिरि किला भी देखने योग्य है। इस किले को 18वीं शताब्दी में राजा मार्तंड वर्मा ने बनवाया था। इसके साथ ही आप गुगनंत स्वामी मंदिर भी देखने जा सकते हैं। इस मंदिर की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह करीब एक हजार साल पुराना मंदिर है। इस मंदिर को एक चोल राजा ने बनवाया था।

कन्याकुमारी आए हैं तो सुचिंद्रम देखना नहीं भूलें। यह कन्याकुमारी से लगभग 13 किलोमीटर दूर स्थित है। 9वीं शताब्दी के शिलालेख इस मंदिर में पाए जाते हैं। यहां पर भगवान शिव, भगवान ब्रह्मा और भगवान विष्णु की एक साथ पूजा की जाती है। यहां पर हनुमान जी की एक बड़ी मूर्ति है जो कि यहां की मूर्तिकला का जीता–जागता उदाहरण है।

नागरकोयिल नागराज का अद्भुत मंदिर है। नागराज का मंदिर होते हुए भी इसमें भगवान शिव और भगवान विष्णु की मूर्तियां हैं। यहां का द्वार चीनी शिल्पकला में बनाया गया है। यहां आपको देखने को मिलेगा कि भक्तों को दिया गया प्रसाद जमीन से निकाला जाता है। यहां नागलिंग फूल भी पाया जाता है। यह मंदिर कन्याकुमारी से बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां तक पहुंचने के लिए आपको आसानी से बसें मिल जाएंगी और यदि आप चाहें तो बंगलौर, चेन्नई, त्रिवेन्द्रम, मदुरै आदि जगहों से यहां रेल व सड़क मार्ग से भी आ सकते हैं।

प्रस्तुति–
शिखर श्रीवास्तव, बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

सर्दियों में कई पर्यटन स्थल हो जाते हैं गुलजार

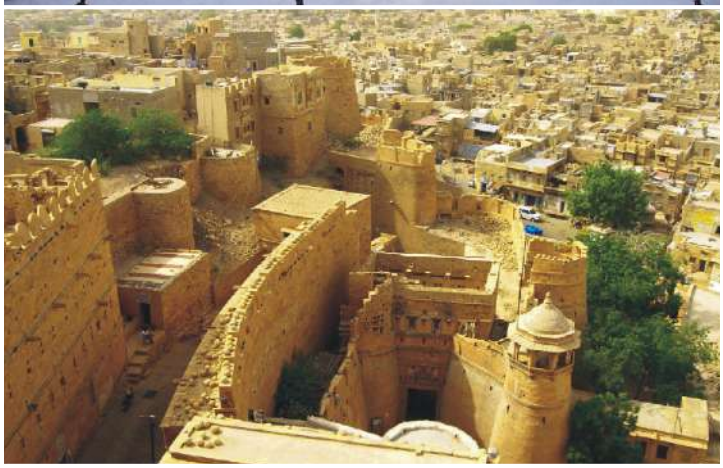

सर्दियों की ठंडी रातें और सर्द सुबह। ऐसे में मन करता हैं, बस चाय और किताबें लेकर रजाई में मजा है। गुलमर्ग की बर्फबारी देखने का आनंद तो इसी मौसम में है। हिमालय की पहाडियां बर्फ की रजाई ओढ़े अलग ही दृश्य प्रस्तुत करती हैं। भारत में भी कुछ ऐसी जगहें हैं जहां इन सर्दियों में घूमने का मजा लिया जा सकता हैं। तो आइए चलें और खूबसूरत सर्दियां मनाएं इन जगहों पर–

मनाली– दिसम्बर में मनाली की बर्फबारी यहां की सुंदरता में चार चांद लगा देती है। बर्फ से ढकी पहाड़ की चोटियों को देखकर ऐसा लगता हैं मानों पूरा हिल स्टेशन सफेद मखमली रजाई से ढका हो।

गुलमर्ग– अगर आप ऐसी जगह जाना चाहते हैं, जहां की खूबसूरती देखकर एक पल के लिए निहारते रह जाएं, तो गुलमर्ग से बेहतर कुछ नहीं। कश्मीर घाटी को तो धरती का स्वर्ग कहा जाता है जब यह पूरी तरह बर्फ से ढ़क जाती है। श्रीनगर से 50 किलोमीटर दूर गुलमर्ग में सबसे ज्यादा बर्फबारी देखने को मिलती हैं। इस दौरान यहां स्कींग का मजा लिया जा सकता है।

जैसलमेर– इसे डेजर्ट (रेतीला) शहर भी कहा जाता है। यहां के खूबसूरत किले देखने के लिए पूरे देश से पर्यटक आते हैं। शादी–शुदा जोड़े और हनीमून के लिए यह जगह बेहतर है। यहां का कैमेल राइड, सूर्योदय और सूर्यास्त देखने का अलग ही आनंद है। यहां आकर ऐसा लगता हैं मानों हम खुद ही राजा है।

मुन्नार– मुन्नार के चाय के बागान बादलों से ढकी ढलानें, खूबसूरत पहाड़ी और प्राकृतिक दृश्य के कारण इसे भगवान का देश कहा जाता है। मुन्नार में साहसिक खेलों का भी आनंद लिया जाता है। हनीमूनर्स के लिए यह बेहतरीन जगह हैं। यहां पूरे परिवार के साथ जा सकते हैं।

कसोल– कुल्लू से 42 किलोमीटर दूर छोटा सा गांव कसोल पार्वती घाटी में बसा है। यहां की खूबसूरती देखते बनती है। मनिकर्ण से सिर्फ पांच किलोमीटर दूर यह गांव बेहतरीन पर्यटक स्थल है।

मसूरी– देहरादून से सिर्फ एक घंटे की यात्रा कर आप खूबसूरत शहर मसूरी पहुंच सकते हैं। साप्ताहांत में भी यहं के खूबसूरत दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है। दिसम्बर के अंत में यहां की बर्फबारी देखते बनती है। क्रिसमस की छुट्टियों में यहां की बर्फबारी और चारों तरफ फैली हरियाली का मजा आप ले सकते हैं।

शिमला– सर्दियों में ज्यादातर लोग शिमला जाना पसंद करते हैं। मनोरंजन के हिसाब से भी शिमला बेहतरीन है। यहां की बर्फबारी पूरे देश से देखने लोग आते हैं।

इसके अलावा दार्जलिंग की खूबसूरत पहाड़ियां, पटनीटॉप की शिवालिक पहाडियों पर बर्फबारी और जोधपुर के ऐतिहासिक किले और यहां की वास्तुकला भी देखने लायक है।

प्रस्तुति- गौरव जोशी, बीजेएमसी द्वितीय वर्ष

स्वच्छ भारत अभियान के मूल्यांकन के लिए 'स्वच्छ सर्वेक्षण'

नरेन्द्र मोदी सरकार के महत्वाकांक्षी 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत देश के 75 शहरों में स्वच्छता की दिशा में किये जा रहे कार्यों की जमीनी हकीकत और गुणवत्ता का आकलन करने के लिए केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय 'स्वच्छ सर्वेक्षण' करा रहा है। शहरी विकास मंत्रालय यह सर्वेक्षण क्वालिटी काउंसिल आफ इंडिया (क्यूसीआई) के सहयोग से करा रही है जिसके तहत निजी शौचालयों एवं सामुदायिक शौचालयों के निर्माण, घर घर जाकर कचरा एकत्र करने संबंधी कार्य, कचरा प्रबंधन एवं निपटरा तथा स्वच्छता के अन्य आयामों की भी जांच परख करने के साथ गुणवत्ता की कसौटी को परखा जा रहा है। सर्वेक्षण पांच जनवरी से शुरू होगा। रिपोर्ट गणतंत्र दिवस से पहले तैयार हो जाने की उम्मीद है।

मंत्रालय में संयुक्त सचिव एवं मिशन निदेशक प्रवीण प्रकाश ने कहा कि स्वच्छ सर्वेक्षण, स्वच्छ भारत मिशन के संबंध में पहला सर्वेक्षण है। मंत्रालय के तहत हम सर्वेक्षण की गुणवत्ता को पूरी तरह से सुनिश्चित करना चाहते हैं। इस दिशा में सर्वेक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्य चल रहा है। पूरी सर्वेक्षण प्रक्रिया में सर्वेक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस कार्य में क्यूसीआई के 110 गुणवत्ता सर्वेक्षकों को लगाया गया है जो 75 शहरों में सर्वेक्षण का काम करेंगे। सर्वेक्षकों को विभिन्न आईटी उपकरणों से लैस किया गया है। क्यूसीआई के महासचिव आरपी सिंह ने कहा कि सर्वेक्षकों में अनेक इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि से हैं। इसमें कई ऐसे लोग भी हैं जिन्हें पूर्व में सर्वेक्षण करने का अनुभव रहा है।

स्वच्छता सर्वेक्षकों को प्रशिक्षित करने का कार्य कोलकाता, हैदराबाद में हो चुका है और नयी दिल्ली और पुणे में यह अभी जारी है। अधिकारी ने कहा कि देश के विभिन्न शहरों और महानगरों में निजी.सार्वजनिक भागीदारी के माध्यम से ठोस कचरा प्रबंधन और अपशिष्ट जल प्रबंधन पहल को आगे बढ़ाने की योजना पर काम हो रहा है। इसके तहत देश के विभिन्न नगर निगम आयुक्तों से 32 आरडब्ल्यूए के नामांकन प्राप्त हुए हैं। स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य भारत को पांच सालों में गंदगी से मुक्त देश बनाना है। इसके तहत ग्रामीण और शहरी इलाकों में सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय बनाना और पानी की आपूर्ति करना, सड़कें, फुटपाथ और बस्तियां साफ रखना और अपशिष्ट जल को स्वच्छ करना जैसे कार्य शामिल हैं।

स्वच्छता को पर्यटन और भारत के वैश्विक हित से जोड़ते हुए प्रधानमंत्री ने कहा है कि भारत के प्रति वैश्विक अवधारणा में व्यापक बदलाव लाने के उद्देश्य से देश के 50 शीर्ष पर्यटन स्थलों में स्वास्थ्य और स्वच्छता का स्तर विश्वस्तरीय होना जरूरी है। इन पहल के तहत स्वच्छता अभियान, पोलिथिन रोधी अभियान एवं सफाई कार्य शामिल हैं। लोगों में जागरूकता फैलाने की पहल भी की जा रही है।

राहुल मित्तल

This Month

December 15, 1840 - Napoleon was buried in Les Invalides in Paris. He had died in exile on the island of Saint Helena after his fall from power.

*****

December 11, 1845 - The first Anglo-Sikh War in India began as the Sikhs attacked British colonial forces. The Sikhs were defeated after four battles. Part of the Punjab region of northwestern India was then annexed by the British.

*****

December 21, 1846 - Anesthesia was used for the first time in Britain during an operation at University College Hospital in London performed by Robert Liston who amputated the leg of a servant.

*****

December 2, 1852 - The Second Empire was proclaimed in France with Napoleon III as emperor.

*****

December 2, 1859 - Abolitionist leader John Brown was executed for treason at Charles Town, West Virginia, following his raid on the U.S. Arsenal at Harper's Ferry.

*****

December 20, 1860 - South Carolina became the first state to secede from the Union in a prelude to the American Civil War. Within two months Mississippi, Florida, Alabama, Georgia, Louisiana and Texas seceded. In April 1861, Virginia seceded, followed within five weeks by Arkansas, Tennessee, and North Carolina, thus forming an eleven state Confederacy with a population of 9 million, including nearly 4 million slaves. The Union had 21 states and a population of over 20 million.

*****

Compilation: Ms. Honey Shah

Basics of Media

Mix-minus : Type of multiple audio feed missing the part that is being recorded, such as an orchestra feed with the solo instrument being recorded. Also refers to program sound feed without the portion supplied by the source that is receiving the feed.

*****

MP3 : A widely used compression system for digital audio. Most Internet-distributed audio is compressed in the MP3 format.

*****

Musical Instrument Digital Interface (MIDI) : A standardized protocol that allows the connection and interaction of various digital audio equipment and computers.

*****

Peak Program Meter (PPM) : Meter in audio console that measures loudness. Especially sensitive to volume peaks, it indicates overmodulation.

*****

Sound Perspective : Distant sound must go with a long shot, close sound with a close-up.

*****

Surround Sound : Sound that produces a soundfield in front of, to the sides of, and behind the listener by positioning loudspeakers either to the front and rear or to the front, sides, and rear of the listener.

*****

Compilation: Rahul Mittal

International Day of Persons with Disabilities

United Nations' (UN) International Day of Persons with Disabilities is annually held on December 3 to focus on issues that affect people with disabilities worldwide.

The International Day of Persons with Disabilities re-affirms and draws attention to the rights of people who live with disabilities.

What Do People Do?

People from many countries worldwide participate in various ways to promote the International Day of Persons with Disabilities. Events may include art exhibitions promoting artwork by people with disabilities. Other events take the form of protests to highlight the difficulties disabled people have in playing a full role in society.

Public Life

The International Day of Persons with Disabilities is a global observance and not a public holiday.

Background

The United Nations Decade of Disabled Persons was held from 1983 to 1992 to enable governments and organizations to implement measures to improve the life of disabled persons all over the world. On October 14, 1992, as this decade drew to a close, the UN General Assembly proclaimed December 3 as the International Day of Disabled Persons. This day was first observed on December 3, 1992. On December 18, 2007, the assembly changed the observance's name from the "International Day of Disabled Persons" to the "International Day of Persons with Disabilities". The new name was first used in 2008.

Symbols

The International Day of Persons with Disabilities is coordinated by United Nations Enable, which works to support and promote the rights and dignity of persons with disabilities. The symbol of Enable is the blue UN symbol and the word "enable". The UN symbol consists of an azimuthal equidistant projection of the globe centered on the North Pole surrounded by olive branches. The word "enable" is written entirely in lower case letters. The letter "e" is red and the other letters are blue.

बालकृष्ण मिश्र

Vol. 11 **No.** 12
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News
under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"Problems worthy of attack prove their worth by fighting back."

Paul Erdos

*****

"Try to learn something about everything and everything about something."

Thomas Henry Huxley

*****

"Dancing is silent poetry."

Simonides

*****

"If you can't get rid of the skeleton in your closet, you'd best teach it to dance."

George Bernard Shaw

*****

"Good people do not need laws to tell them to act responsibly, while bad people will find a way around the laws."

Plato

*****

"The power of accurate observation is frequently called cynicism by those who don't have it."

George Bernard Shaw

*****

Compilation: Ms. Bhavna Madan Vij

Winners V/s Loosers

Part-53

Winners are like a thermostat;
Losers are like thermometers.

*****

Winners choose what they say;
Losers say what they choose.

*****

Winners use hard arguments but soft words; Losers use soft arguments but hard words.

*****

Winners stand firm on values but compromise on petty things; Losers stand firm on petty things but compromise on values.

*****

Winners make it happen;
Losers let it happen.

*****

to be continued in next issue

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at youngster@tecnia.in